खेल-खेल में खेती: बच्चों के लिए एक नई सीख

डॉ. मुनेश्वर प्रसाद मंडल

पादप कार्यिकी एवं जीव रसायन विभाग, भोला पासवन शास्त्री कृषि महाविद्यालय, पूणिया, बिहार - 854302

ईमेल : mpmbotany64@gmail.com

खेत: बच्चों की पहली प्रयोगशाला

बचपन एक ऐसी अवस्था है जिसमें कल्पना, कौतुहल और खोज की प्रवृत्ति अपने चरम पर होती है। आम तौर पर इस ऊर्जा को किताबों, स्क्रीन, और खेलकूद के माध्यमों से दिशा दी जाती है, लेकिन यदि खेतों को बच्चों की प्रयोगशाला बनाया जाए तो यह अनुभव उनके जीवन की गहराई तक असर डाल सकता है। जब बच्चा मिट्टी में हाथ डालता है, बीज बोता है और रोज़ उस अंकुर को बढ़ते हुए देखता है, तो वह सिर्फ पौधा नहीं उगा रहा होता, बल्कि अपने भीतर धैर्य, आशा और ज़िम्मेदारी के बीज भी बो रहा होता है। यह खेल की तरह लगता है, लेकिन वास्तव में यह सीखने और जीने की कला का प्रारंभ होता है। खेत का हर कोना - चाहे वह सिंचाई की नाली हो या फसल की कतारें - बच्चों को सिखाने वाला जीवंत अध्यापक बन जाता है। वे मौसम को पढ़ते हैं, कीटों की हरकतों को समझते हैं और बीज की ताक़त को पहचानते हैं।

खेती के बहाने विज्ञान, पर्यावरण और जीवन की शिक्षा

खेती केवल कृषि कार्य नहीं, बल्कि विज्ञान, पर्यावरण और जीवन कौशल का समुच्चय है। जब बच्चा पौधे को बढ़ते देखता है, तो वह स्वतः ही प्रकाश संश्लेषण, जल चक्र और पोषण तत्त्वों की भूमिका को महसूस करता है। वह यह समझता है कि सूरज, पानी, मिट्टी और हवा - ये सभी मिलकर जीवन बनाते हैं। किसी पाठ्यपुस्तक में पढ़ाया गया 'फोटोसिंथेसिस' उसे उतना नहीं समझा सकता जितना एक पीला पड़ा पौधा और उसमें डाली गई पहली बाल्टी पानी समझा सकता है। खेती से बच्चों को जैविक कीटनाशकों, जैव उर्वरकों, और जल संरक्षण जैसे जमीनी मुद्दों की जानकारी मिलती है। वे यह भी समझते हैं कि प्रकृति के साथ संतुलन बनाए बिना मनुष्य का अस्तित्व संभव नहीं। आज जब जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक संकट बन चुका है, तो खेती बच्चों को उसके मूल कारणों और समाधान दोनों से जोड़ने का एक सरल और व्यावहारिक माध्यम बन सकती है।

फसल से थाली तक: पोषण की सच्ची समझ

बच्चों को स्वस्थ भोजन के लिए प्रेरित करना कई माता-पिता और शिक्षकों के लिए एक चुनौती है। लेकिन जब बच्चा खुद पालक, टमाटर, मूली या बाजरा उगाता है, तो उसमें उस भोजन के प्रति एक आत्मीयता विकसित होती है। वह जानता है कि उसमें कितनी मेहनत लगी है, कितना समय लगा, और प्रकृति की कितनी कृपा रही है। यही भाव उसे भोजन के प्रति सम्मान सिखाता है, उसे बर्बादी से रोकता है और पोषण के प्रति जागरूक बनाता है। विशेषकर मोटे अनाज जैसे रागी, ज्वार और बाजरा जिन्हें संयुक्त राष्ट्र द्वारा "अंतरराष्ट्रीय मिलेट वर्ष 2023" में मान्यता दी गई - यदि बच्चों को इन्हें उगाने और पकाने का अनुभव मिले, तो वे न केवल पोषण बल्कि परंपरागत खाद्य विरासत को भी समझ सकेंगे। यह खेती केवल कृषि न होकर खाद्य शिक्षा का एक अभिनव रूप बन जाती है, जिसमें थाली और खेत के बीच सीधा रिश्ता स्थापित होता है।

खेत में संवाद: ग्रामीण और शहरी बच्चों की साझी पाठशाला

खेती एक ऐसा साझा मंच बन सकती है जहाँ ग्रामीण और शहरी बच्चों के बीच संवाद स्थापित हो। गाँव के बच्चे जहाँ परंपरागत ज्ञान और प्राकृतिक लय से परिचित होते हैं, वहीं शहरी बच्चे तकनीक और संरचित शिक्षा में निपुण होते हैं। यदि स्कूलों द्वारा खेत भ्रमण, संयुक्त खेती परियोजनाएँ या 'मित्र किसान' कार्यक्रम शुरू किए जाएँ, तो यह विभाजन मिटाया जा सकता है। बच्चे एक-दूसरे से सीखेंगे, सहयोग करना सीखेंगे और विविधता का सम्मान करना भी। शहरी बच्चों को पता चलेगा कि दूध, फल और सब्ज़ियाँ सुपरमार्केट से नहीं, खेतों से आते हैं, वहीं ग्रामीण बच्चों को भी यह अहसास होगा कि उनका जीवन और ज्ञान कितना मूल्यवान है। इस प्रक्रिया में एक सामाजिक समरसता भी विकसित होती है और बच्चों का दृष्टिकोण व्यापक होता है।

e-ISSN No. 2583-0937

खेत बने पाठशाला: शिक्षा में खेती की स्थायी जगह

यदि हम वास्तव में बच्चों को खेत से जोड़ना चाहते हैं, तो केवल एक या दो भ्रमण से बात नहीं बनेगी। इसके लिए खेती को औपचारिक शिक्षा प्रणाली का हिस्सा बनाना होगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) पहले ही अनुभवात्मक शिक्षा की बात करती है। स्कूलों में 'बच्चों का खेत', 'किचन गार्डन', 'फसल उत्सव' जैसे कार्यक्रम नियमित किए जा सकते हैं। हर बच्चे को एक पौधा सौंपा जाए - जिसका वह नामकरण करे, देखभाल करे और उसके जीवनचक्र को समझे। विज्ञान की प्रयोगशाला से इतर यह एक जीवंत प्रयोगशाला होगी जहाँ बच्चे न केवल पर्यावरण विज्ञान पढ़ेंगे, बल्कि उसे जीएंगे। पाठ्य पुस्तकों के कठिन शब्द - जैसे जैव विविधता, पारिस्थितिकी तंत्र, कृषि पद्धति - बच्चों को खेत के ज़रिए सहज रूप में समझाए जा सकते हैं। इस तरह स्कूल केवल चारदीवारी नहीं, बल्कि खेतों से खुलने वाली खिड़कियाँ बन सकती हैं।

निष्कर्ष: खेतों से जुड़े तो भविष्य सुरक्षित

"खेल-खेल में खेती" कोई बालसुलभ कल्पना नहीं, बल्कि एक गंभीर शैक्षिक, सामाजिक और सांस्कृतिक ज़रूरत है। आज जब बच्चों में एकाग्रता की कमी, प्रकृति से दूरी और सामाजिक उदासीनता देखी जा रही है, तो खेती इन्हें ठीक करने का एक सहज, मौलिक और प्रभावी समाधान बन सकती है। खेत बच्चों को न केवल भोजन देना सिखाता है, बल्कि जीवन की सच्चाइयों से जोड़ता है - धैर्य, परिश्रम, पर्यावरण के साथ सामंजस्य और संघर्षों का सामना करने की हिम्मत। एक ऐसा बच्चा जो बीज बो सकता है, पौधे की देखभाल कर सकता है और फसल काट सकता है - वह अपने जीवन की ज़िम्मेदारी भी उठा सकता है। अतः हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हर बच्चे को कम से कम एक बार खेत से जुड़ने का अवसर मिले - ताकि वह मिट्टी को केवल गंदगी न समझे, बल्कि जीवन की जड़ें पहचान सके। यही 'खेल-खेल में खेती' की असली सीख होगी - बच्चों के लिए, समाज के लिए और भविष्य के लिए।

e-ISSN No. 2583-0937